गुणक प्रभाव

एमबीए छात्रों की एक कक्षा में मूल्य निर्धारण के मुद्दे पर एक केस पर चर्चा हो रही थी। चर्चा के दौरान एक मुद्दा यह उभरा कि क्या क्या वैकल्पिक प्रचार रणनीतियाँ हो सकती हैं। प्रशिक्षक प्रोफेसर शानबाग ने एक शिक्षक का मामला सुनाया जो जमीनी स्तर के अनुभवों से विकसित रणनीतिप्र बंधन पर भारतीय साहित्य का प्रचार-प्रसार करने की कोशिश कर रहे थे। शिक्षक लघु केस अध्ययन सामग्री विकसित कर रहे थे जिन पर एमई (मोबाइल सक्षम) शिक्षण का उपयोग करके (और प्रतिभागियों के लिए मुद्रित केस सामग्री की व्यवस्था करने की परेशानी के बिना) चर्चा की जा सकती थी।

शिक्षक नरेंद्र मोहन ने रणनीतिक प्रबंधन को सरल तरीके से समझने के लिए एक सेट पुस्तकें (प्रबंधन शिक्षा के लिए केस विधि, रणनीतिक प्रबंधन पर पाठ्यक्रम और कार्यक्रम संचालित करने के लिए केस बुक, संकाय सदस्यों के लिए केस विश्लेषण पुस्तकें), और अंत में कामकाजी प्रबंधकों के लिए एकीकृत सोच क्षमता को बढ़ाने पर एक पुस्तक विकसित की थी।

पुस्तकें ऑनलाइन बिक्री के माध्यम से मुद्रित और ई-पुस्तक प्रारूप में उपलब्ध थीं। वह स्थापित प्रकाशकों के पास नहीं जाना चाहते थे, जो कॉपीराइट और अन्य परेशानियों के कारण प्रशिक्षकों को पाठ्यक्रम/कार्यक्रम सामग्री को अनुकूलित करने के लचीलेपन से वंचित कर देता है।

पचहत्तर वर्षीय नरेंद्र मोहन ने किसी भी शिक्षण/प्रशिक्षण कार्य को स्वीकार या मानदेय आधारित गतिविधियों को स्वीकार करना बंद कर दिया था । परन्तु जब उन्हें एक प्रबंधन संस्थान में एक सम्मेलन को संबोधित करने के लिए आमंत्रित किया गया जहाँ पर विषय उनकी आखिरी पुस्तक से संबंधित था, तो उन्होंने अपने काम पर प्रतिक्रिया प्राप्त करने के लिए निमंत्रण स्वीकार कर लिया।

सम्मेलन से लौटने पर उन्होंने मेज़बान को धन्यवाद पत्र भेजा। मेज़बान पत्र की विषय-वस्तु को देखकर थोड़ा आश्चर्यचकित हुआ (प्रदर्शन 1 देखें)। क्या यह सच था या कहीं व्याकरण संबंधी या गणना संबंधी ग़लती थी? कोई व्यक्ति रुपये की किताबें कैसे बेच सकता है? 28000 रु. 7150?

Q1. क्या पत्र में कोई गलती है? अगर नहीं तो क्या आप भी हैरान हैं?

Q2. यदि नहीं, तो बताएं कि रु. 28000 की पुस्तकें केवल 7000रु पये में कैसे बेचा जाएगा?

Q3. शिक्षक मुद्रित पुस्तकों के बजाय ई-पुस्तकें क्यों भेजना चाहते थे? क्या इसके कोई विशेष लाभ हैं?

Q4. क्या नरेंद्र मोहन प्रदर्शनी 2 में दिखाया गया पत्र भेज भेज देना चाहिए?

प्रदर्शनी 1

प्रिय डॉ. वाडेकर,

मैं आपके संस्थान में आने के लिए कोई भी भुगतान स्वीकार करने में अनिच्छुक था, लेकिन मैंने पाया कि डॉ. श्रीवत्सन ने 10000/- रुपये से भरा एक लिफाफा रखा था मेरे बैग में। मेरे पास इसे वापस करने का समय नहीं था और मैं सोच रहा था कि इसके साथ क्या करूं। मैंने इस पर विचार किया और निम्नलिखित कार्रवाई की।

भुगतान प्राप्त		10000
खर्च हुआ		
टैक्सी: आईजीआई एयरपोर्ट पर निवास	19.02.19	800
होटल अहमदाबाद में खाने का बिल	20-21.02.19	600
टैक्सी: होटल से हवाई अड्डे तक	21.02.19	900
टैक्सी: आईजीआई एयरपोर्ट से निवास तक	21.02.19	550
शेष बचा		**2850**

निर्णय: एक वर्ष की अवधि में भारत में 280+ एमबीए संस्थानों के पुस्तकालयों को मेरी ई-पुस्तक "एन्हांसिंग इंटीग्रेटिव थिंकिंग एबिलिटी" (कीमत रु. 100/-) की एक-एक प्रति भेजें।

पुस्तक में दिए गए संदेश को 80 से अधिक संस्थानों तक फैलाने में योगदान देने के लिए धन्यवाद।

इस कार्रवाई का निर्णय लेते समय एक बहुत ही दिलचस्प बात मेरे दिमाग में आई, जिसे मैंने आपके साथ साझा करना उचित समझता हूँ ।

मेरे दौरे पर आपके संस्थान द्वारा किया गया कुल व्यय

हवाई किराया	16839
होटल में ठहरने का शुल्क (लगभग)	7000
मानदेय	10000
कुल	33839

मेरे द्वारा खरीदे गए टिकटों का रद्दीकरण शुल्क
बेंगलुरु- दिल्ली
बेंगलुरु-अहमदाबाद-दिल्ली

20046

कुल परिहार्य व्यय यदि व्यक्तिगत यात्रा को स्काइप आधारित प्रस्तुति द्वारा प्रतिस्थापित किया गया था (जैसा मैंने प्रश्न उत्तर सत्र दौरान बताया था) 53885

इतनी राशि **से** भारत में लगभग 2150+ एमबीए संस्थानों (2018-19 में भारत में सभी एमबीए संस्थानों का लगभग 69%) को अपनी लाइब्रेरी में उपरोक्त ई-पुस्तक की एक प्रति **कराई जा सकती थी**।

अजीब है ना?

सादर,

आपका,

मोहन

मोबा : (+91) 9453023432/7991323262/9415126367/9696561946

डॉ. वाडेकर का उत्तर

प्रिय प्रोफेसर नरेंद्र मोहन,

मैं आपसे सहमत हूं। सर, हम ईकॉपी और स्काइप सॉल्यूशंस द्वारा इस पर सकारात्मक कार्रवाई करेंगे। सर, मार्गदर्शन और समर्थन के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

वाडेकर

.....

निदेशक महोदय का संदेश प्राप्त हुआ,

हमारे संस्थान में आपका होना वास्तव में एक आशीर्वाद था। आपने इस अवसर की शोभा बढ़ाई और हमारी शिक्षा को बहुत महत्व दिया। मैं केवल संकाय सदस्यों को संबोधित करने के लिए आपके एक सत्र की व्यवस्था करने का प्रयास करूंगा।

सादर,

डॉ. ए. सिंह निदेशक